

8. नागरिकशास्त्र एवं नीतिशास्त्र: —

ना०शा० व नीतिशास्त्र के सम्बन्ध के विषय में प्रो० पुन्ताम्बेकर का कथन है, "यदि नीतिशास्त्र उत्तम जीवन दर्शन है तो ना०शा० उसका प्रयोग है।"

सही अर्थ में यदि देखा जाये तो दोनों ही विषय नैतिक आचरण की शिक्षा देते हैं व आदर्शों की बात करते हैं। विचारकों का मानना यह है कि बिना धर्म के नागरिक एक मृत्युपाश है। एक विद्वान ने ठीक ही कहा है, "ना०शा० नैतिक सिद्धान्तक व व्यवहारिक दोनों है।"

प्रसिद्ध शिक्षाविद् फॉय ने ठीक ही कहा है, "यदि कोई चीज नैतिक दृष्टि से अनुचित है तो वह नागरिक दृष्टि से उचित हो ही नहीं सकती है।" इस सम्बन्ध में काण्ट का विचार यह है कि, "सच्चा नागरिकशास्त्र जब तक नैतिकता में प्रवृद्धि नहीं रखता है, एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता है।"

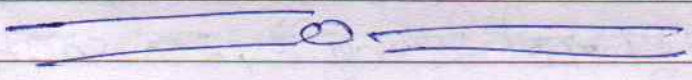
वास्तव में नागरिकशास्त्र अपनी विषय वस्तु न्यायशास्त्र से ही ग्रहण करता है। चूँकि बिना आचरण के कोई भी नागरिक प्रष्ट नागरिक नहीं बन सकता। अतः दोनों ही शास्त्र परस्पर सम्बन्धित हैं।

प्राचार्य

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

2. नागरिकशास्त्र एवं मनोविज्ञान: —

नागरिकशास्त्र समाज में विद्यमान सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक समस्याओं का हल करता है। इन समस्याओं का हल जब हम मनोविज्ञानिक परिदृश्य में करते हैं तो हम नागरिकशास्त्र व मनोविज्ञान को जोड़ते हैं। इसके साथ ही मनोविज्ञान वंशानुक्रम, पर्यावरण, व्यक्तित्व तथा उनकी मानसिक समस्याएं आदि का अध्ययन करता है और नागरिक के लिए आवेदन-क्षम है कि वह मानसिक इच्छा से परिपक्व हो जिससे वह पारोस्थानिक के साथ अनुकूलन स्थापित कर सके। इस प्रकार भी यह दोनों विषय एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं।



प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

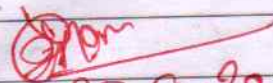
अभ्यास आधारित प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:-

1. आप विद्यालय-पाठ्यक्रम के अन्य विषयों से नागरिक शास्त्र का किस प्रकार समन्वय स्थापित करेंगे?
2. भारत में दालों के लिए नागरिक शास्त्र की आवश्यकता तथा महत्व को स्पष्ट कीजिए?
3. नागरिक शास्त्र की प्रकृति की विवेचना कीजिए?
4. नागरिक शास्त्र की परिभाषा दीजिए तथा इसके क्षेत्र को स्पष्ट कीजिए?

प्राचार्य

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया


23.9.20